भगत रविदास – सबद ७
म्रिग मीन भ्रिंग पतंग कुंचर एक दोख बिनास ॥
रागु आसा, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ४८६

म्रिग मीन भ्रिंग पतंग कुंचर एक दोख बिनास ॥
पंच दोख असाध जा महि ता की केतक आस ॥१॥
माधो अबिदिआ हित कीन ॥
बिबेक दीप मलीन ॥१॥ रहाउ ॥
त्रिगद जोनि अचेत स्मभव पुंन पाप असोच ॥
मानुखा अवतार दुलभ तिही संगति पोच ॥२॥
जीअ जंत जहा जहा लगु करम के बसि जाइ ॥
काल फास अबध लागे कछु न चलै उपाइ ॥३॥
रविदास दास उदास तजु भ्रमु तपन तपु गुर गिआन ॥
भगत जन भै हरन परमानंद करहु निदान ॥४॥१॥

सार: अज्ञान एक छलपूर्ण आराम प्रदान करता है जो लोगों को बिना अपने कर्मों और जीवन के गहरे उद्देश्य पर प्रश्न उठाये, बिना सोचे-समझे जीने के लिए लुभाता है। इस अवस्था में, समझदारी की अंदरूनी शक्ति जो सही-गलत का फ़र्क़ करने के लिए ज़िम्मेदार है, धुंधली हो जाती है जिससे सत्य को स्पष्ट रूप से देखने की क्षमता कम हो जाती है। किंतु जब विवेक का प्रकाश अज्ञान के अंधकार को चीरता है तब चेतना का उदय होता है। इसी जागरूकता से 'परमानंद' की अवस्था आती है, ऐसी परम तृप्ति जो बाहरी सुखों या मान्यता पर निर्भर नहीं होती। यह उस शांत आनंद का अनुभव है जो तब खिलता है जब अहंकार का बंधन ढीला पड़ता है और चेतना समग्र, सर्वव्यापी सामंजस्य से जुड़ जाती है।

म्रिग मीन भ्रिंग पतंग कुंचर एक दोख बिनास ॥
हिरण, मछली, भौंरा, पतंगा और हाथी, यह सभी अपनी एक ही कमी से नष्ट हो जाते हैं। यह पंक्ति प्रत्येक प्राणी की कमज़ोरी को दिखाती है जैसे, हिरण की आवाज़, मछली के लिए स्वाद, मधुमक्खी के लिए गंध, पतंगे के लिए दृष्टि और हाथी के लिए स्पर्श। यह दर्शाता है कि बिना सोचे-समझे, अनियंत्रित इंद्रियों की इच्छाओं का पीछा करना आत्म-विनाश का कारण बनता है।

पंच दोख असाध जा महि ता की केतक आस ॥१॥
जिसमें पाँचों लाइलाज इंद्रियों के दोष रहते हैं, उसके लिए मुक्ति की क्या आशा हो सकती है? यह सवाल इस बात पर ज़ोर देता है कि अगर कोई अपनी कमज़ोरियों पर काबू नहीं पा सकता तब वह अपनी सीमित सोच से कैसे आज़ाद हो सकता है। (१)

माधो अबिदिआ हित कीन ॥
हे प्यारे सर्वव्यापी स्रोत, मन ने अज्ञानता और माया से गहरा लगाव बना लिया है। यह एक मानसिक असंतुलन को दर्शाता है जहाँ आत्मा परिवर्तन की ज्ञानवर्धक चुनौती को अपनाने के बजाय परिचितता की आरामदायक छाया से ही जुड़ी रहती है।

बिबेक दीप मलीन ॥१॥ रहाउ ॥
जब ज्ञान का प्रकाश फीका पड़ने लगता है तब यह आंतरिक स्पष्टता के नुकसान का संकेत देता है। इसमें अज्ञानता समझने की क्षमता पर बादल छा जाते हैं। (१)(विराम)

त्रिगद जोनि अचेत स्मभव पुंन पाप असोच ॥
मानव अस्तित्व एक सहज जीव के समान हो जाता है जो सकारात्मक संरेखण और नकारात्मक प्रवृत्तियों के बीच के अंतर के विवेक-पूर्ण भेद से अनजान होता है। इसका तात्पर्य है कि जीवन विचारशील चिंतन के बजाय गति से चलता है।

मानुखा अवतार दुलभ तिही संगति पोच ॥२॥

मानव अस्तित्व को दुर्लभ अवसर के तौर पर देख सकते हैं और जब यह बुरे इरादों से जुड़ जाता है तब अक्सर समझौता करता है। बर्बाद किये गए जीवन की क्षमता का यह प्रतीक है जब वह नकारात्मक संगति और चिंतन की कमी के माध्यम से स्वयं को गिराता है।(२)

जीअ जंत जहा जहा लगु करम के बसि जाइ ॥

जब जीव अपने कर्मों से जुड़ जाते हैं तब वह उनमें बंध जाते हैं। यह हमारी विकल्प के चुनाव की शक्ति और उनके प्रभाव जो जीवन का नियंत्रण करते हैं, के प्रति अनजानपन को दर्शाता है। यह कारण और प्रभाव के नियम की ओर इशारा करता है जहाँ पुरानी आदतों की गति मन की वर्तमान दिशा तय करती है।

काल फास अबध लागे कछु न चलै उपाइ ॥३॥

समय की अटूट पकड़ शक्तिशाली और अटल है। कोई भी उपाय की रणनीति या कौशल इसकी पकड़ को खत्म नहीं कर सकता। यह स्मरण कराता है कि समय न रुकता है, न लौटता है और खोए अवसर भी फिर वापस नहीं मिलते। (३)

रविदास दास उदास तजु भ्रमु तपन तपु गुर गिआन ॥

रविदास कहते हैं कि वह एक विनम्र भक्त हैं जिन्होंने संदेह, अनियंत्रित इच्छाओं और तपस्या को त्याग दिया है और यह परिवर्तन उस ज्ञान के माध्यम से हुआ जिसने उन्हें अज्ञान से जागरूकता की ओर निर्देशित किया। यह अनुशासन को शारीरिक कष्ट के रूप में नहीं बल्कि एक प्रबुद्ध मन के रूप में पुनर्परिभाषित करता है जो मोह के त्याग की ओर ले जाता है।

भगत जन भै हरन परमानंद करहु निदान ॥४॥१॥

समर्पित साधकों, भय का नाश करो और परम आनंद की सर्वोच्च अवस्था को अंतिम लक्ष्य के रूप में प्राप्त करो। यह गहन अनुभूति प्रकट करती है कि जब ज्ञान अज्ञान की बाधाओं को दूर करने में मदद करता है तब विवेक आनंद की अपनी स्वाभाविक अवस्था में स्थापित हो जाता है। (४)(१)

तत्त्व: भक्त रविदास पाँच प्राणियों के उदाहरण द्वारा यह स्पष्ट करते हैं कि इंद्रियों का मोह हमारी चेतना को कैसे जकड़ लेता है। हिरण शिकारी के संगीत के आकर्षण का शिकार हो जाता है। मछली चारे का स्वाद लेने की इच्छा के कारण मर जाती है। भौंरा फूल की ख़ुश्बू में फंस जाता है। रोशनी की ओर आकर्षित पतंगा आग को सूरज समझकर जल जाता है। हाथी मादा हाथी के लालच में आकर अपनी शारीरिक इच्छा के कारण ज़ंजीरों में बंध जाता है। यह उदाहरण बताते हैं कि इन जानवरों की तरह, बिना नियंत्रण वाली इंद्रियाँ हमारे पतन का कारण बन सकती हैं। समस्या इंद्रियों में नहीं है बल्कि हमारी अज्ञानता और अहंकार में है जो बिना सोचे-समझे जीने के आराम को चुनकर, अंधेरे को रोशनी समझकर हमारे निर्णय को धुंधला कर देते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com